Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-VIII Aug. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

भारतीय संगीत का उत्पत्ति अंतरप्रवाह

प्रा.डा.अंकुश गिरी
संगीत विभाग
महिला महाविद्यालय, अमरावती

प्राक्कथनः–

संगीत शिक्षा के प्रारंभिक स्तर से ही मुझे प्रस्तुत विषयमें काफी दिलचस्पि रही है । इसी चिकित्सावश प्रस्तुत विषयका अध्ययन विविध दृष्टिकोनसे इस शोध निबंध में किया है । भारतीय लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत प्राचीन कालसे ही विलीन स्वरूप में एकदुजे में सम्मिलित होते हुये खुद की आकृति से स्पष्टतासे अलग दिखाई देते है इन्हीं अंतर्गत सह संहसंबध को हम धार्मिक, मनौवैज्ञानिक तथा विज्ञान की कसोटीपर देखेंगे।

1. धार्मिक दृष्टिकोन

प्राचिन भारतीय प्रबुध्द ऋषियों मनीषीयों एवं द्रष्टाओं ने सृष्टि की उत्पत्ति ही नाद ब्रम्हम से मानी थी । शिव, ब्रम्ह, सरस्वती, गन्धर्व और किन्नर जो हम अपनी संगीत कला के आदि प्रेरक मानते चले आये है इसके मूल में यही भावना हि संगीत कला दैवी प्रेरणा से ही प्रादूर्भूत हुई है। ऐसा माना जाता है की ब्रम्हा ने संगीत का निर्माण किया तथा उसे शिवजी को दिया। शिव से यह सरस्वती को मिला, सरस्वती ने नारद को तथा नारद ने इसका प्रचार गंधर्वो, किन्नरों आदि में किया। इस प्रकार संगीत प्रसारित होता गया।1

अन्य मत के अनुसार शिव ने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण तथा आकाश की ओर अपने पांच मुखों से पाच राग भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक राग बताये तथा पार्वती ने छठा राग कौशिक उत्पन्न किया2 ब्रम्हांड की प्रत्येक चराचर वस्तू में नाद व्याप्त है। अतएव इस नाद को 'नाद–ब्रम्ह' संज्ञा दी गई है। इसी से राजयोगी महाराज भर्तृहरि ने अपनी पुस्तक'वाक्यवादी' में नाद को ब्रम्हा माना है। वे कहते है –

अनादिनिधनं ब्रम्ह शब्दत्वायदक्षरम्।
विवर्तते अर्थभावेन प्रकिया जगातोयतः।।

अर्थात – शब्दरूपी ब्रम्ह अनादि, विनाश–रहित और अक्षर है तथा उसकी विवर्त प्रकिया से ही यह जगत् भासित होता है।3

हर धर्म में अनेक कथायें प्रचलित है जो संगीत की उत्पत्ति के विषय में बताती है। भारतीय हिंदू विचारधारा के अनुसार संगीत का मूल सामवेद है। धार्मिक पृष्ठभूमि की धरोहर पर संगीत को गंधर्व विद्या भी कहा है। इसलिये सामदेव का उपवेद गंधर्व वेद है। 'सामवेद ऐसा वेद है जिसके मंत्र यज्ञों में देवताओं की स्तुती करते हुए गाए जाते थे। 'तैत्तिरिय उपनिषद्' में संगीत का येथेष्ट दिग्दर्शन है। 'छांदोग्य औंर बृहदारण्यक' उपनिषदो में साम गायन का उल्लेख है।4 संगीत शास्त्र के सिध्दांतो और नियमों का सर्वप्रथम उल्लेख 'ऋक् प्रतिशाख्य' में मिलता है। इसमें तीन स्थानो और सप्त स्वरों का उल्लेख है।5

वेदोंत्तरकालीन साहित्य में भी संगीत प्रियता के उल्लेख मिलते है। पाणिनी ने भी अपनी 'अष्टध्यायी' में संगीत संबंधी कई उल्लेख किये है। 'अष्टध्यायी' में अनेक प्रकार के वाद्यों के नाम आये है–मृदंग (4।4।85), मुड्डक (हुडक) और झर्झर (झांझ, 4।4।56), तूर्याग (वृंद–संगीत 2।2।2), गायक

(गानेवाला) और नर्तक (नाचलेवाले), का (3।1।145–146) उल्लेख आता है। पाणिनि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' (4।3110) में शिलालि और कृशाश्व के रचे नट सुत्रों को उल्लेख किया है।6

संगीत कला की उत्पत्ति के भारतीय धार्मिक विचारों से देव देवताओं को प्रेरक माना गया है। संपूर्ण विश्व में प्रचलित धार्मिक मान्यताओं का अगर हम विचार करें तो सभी ने धार्मिक विचारा अनुसार देवी देवताओं को संगीत के निर्मिती का स्त्रोत माना है। फारसी की एक कथा में ऐसा कहा है की हजरत मूसा पैगम्बर को एक पत्थर मिला। इस पत्थर के सात तूकडे हो गये। जिनमें से सात धाराएं बहने लगी तथा हर धारा से अलग ध्वनियॉ निकली जो सात स्वर बन गये।7 इस्लाम के प्रचार के पहले अरब में भक्ति संगीत, लौकिक संगीत और लोक संगीत मख्यतः प्रचार में था। भक्ति संगीत के माध्यम से वे लोग अपने देवी देवताओं की पूजा गायन और नृत्य व्दारा करते थे। मुस्लिम राष्ट्रो और मुस्लिम जातियों का संगीत अरब, उत्तर अफ्रीका और पार्शिया तक विस्तृत है। अरब संगीत के शास्त्रीय ग्रन्थों में नववी शताब्दी के अलकिदी, अलफरेबी, अवीसेन्ना (11 वी शताब्दी), सैफुद्दिन (13 वी शताब्दी), अब्देल कादिर (15 वी शताब्दी) उल्लेखनीय है।8 चीनी संगीत की परम्परा पौराणिक है। इसके अनुसार सम्राट फ्यूसी (2852 इ.पू.) वहॉ की प्रारम्भिक संगीत पध्दती के प्रवर्तक है. फ्यूसी के अतिरिक्त चार अन्य दैवो शासक (डिव्हान रूलर) हूए।9

प्राचिन ग्रीस व रोम के धार्मिक संगीत में केवल पाच स्वरों का प्रयोग किया जाता था। वहॉ के मठ तथा मंदीरों में विविध ज्ञान विज्ञान के साथ संगीत की भी शिक्षा दी जाती थी। वहा के संगीत तज्ञों में 1300 इसा पू ऑर्कियस का नाम उल्लेख है। अपोलो ग्रीक के सुर्य देवता थे जो उत्तम लायर वादक तथा संगीत संरक्षक के रूप में प्रसिध्द थे।10

धार्मिक दृष्टीकोन से हमारे भारत में हि नाही अपितू संपूर्ण युरोप, अरब, फारस ग्रीक, चीन, जपान, जावा, कम्बोडिया, बाली और मीश्र में देव को संगीत का आदि प्रेरक माना है। संगीत को यूनानी भाषा में शब्द है मौसिकी, लैटिन में मुसिका, फ्रांसीसी में मुसीक, अंग्रजी में म्यूजिक इब्रानी, अरब और फारसी में मोसीकी। इन सब शब्दों में साम्य है।

इन सभी तत्वों का अगर हम मतितार्थ निकाले तो यही निष्पन्न होता है की धर्म का सभी सभ्यता तथा संस्कृतिपर भारी पगडा रहा है। और परमेश्वर तथा ईश्वर प्राप्ति के लिये संगीत के अलावा दूसरा कोई सशक्त माध्यम नही। मानव सदा से ही ईश्वर की असीम कृपा के लिए संगीत का उपयोग करता रहा है। भारत नाही किंसी भी देश में प्रार्थना, आरती, अजान, आदी स्वरूपों में संगीत का महत्व उच्च स्थर का है। वल्लभ संप्रदाय में तो सूबह से लेकर रात तक केवल धृपद गायने करने से विविध ऋतूओं में उन भाव अनुरूप राग समय चक्र व्दारा रागों का चयन कर के पुरी तन्मयतासे पूजाअर्चा कि जाती है। मंदीरो में आरती, मज्जीद में अजान, चर्च में प्रेअर के सिवा शुरूवात ही नही होती। इसिलिये संगीत में प्रवीण कलाकारों का महत्व सदासे ही समाज में उच्च स्थर का रहा है। इन सभी उपरोक्त सभी संदर्भ से यह पूष्टी मिलती है की धर्म और संगीत अलग न होकर एक दूसरे में पूर्णतः विलय है।

2. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

बाद के उगम और निर्मिती संबंध में उपस्थित प्रश्नोंपर भारतीय विचार जगत में बहुत सारा मंथन हूआ है। बारावी शताब्दि के शुरूवात में योग, तंत्र, आयूर्वेद, संगीतशास्त्र, तत्वज्ञान, धर्मविचार, व्याकरण आदि ने अपने मत प्रस्तुत किये जो जनमत व्दारा स्विकृत भी हुए। इस वक्त मानसशास्त्र काफी उन्नत हो चुका था। संगीत के उत्पत्ती पर मनोवैज्ञानिक विचार भी सामने आये।

भारतीय योग, आध्यात्म, तंत्र विचारा धाराओं अंतर्गत मानवी शरीर बाहरी व्यापक विश्व (ब्रम्हांड) की पूर्ण प्रतिकृति है। शरीर पर विशिष्ट प्रकार से साधना करके शरीरस्थ आत्मा विश्वस्थ परमात्मा इनका ऐक्य प्रस्थापित करना यही उद्देश्य इन शास्त्रज्ञोंनें अपना लक्ष माना है। मनोवैज्ञानिक दृष्टीकोण

से मानवी शरीर में नाद की उत्पत्ति के बारे में गंधर्व वेद में कहा है की प्रथमतः उदान वायू नाभिचक्रमें स्थित मणीपूरक मर्म आघात करके मूळधारचक्रव्दार हृदयमर्मा पर नाद की किया उत्पन्न करता है। यह किया उत्पन्न होते समय इडा, पिंगला और सुषन्मा इन नाडीयों व्दारा उनको मदत होती है। यह से यह नाद हृदय की अत्यंत सूक्ष्म असंख्य, अतिसूक्ष्म नाडीयों से जाकर ब्रम्हरंध्रतक पोहचता है और यहा से कंठ की मर्मस्थान में आकर मुख्य व्दारा बाहर आता है। इन सभी किया कों इतना सूक्ष्म वक्त लगता है की उसको माप नही सकते। इसिलिये सोमनाथ ने नाद को पॉचवा उपवेद माना है।11

भारतीय विचारधारा आत्मानुभूति की परिवक्ष में ज्यादा संवेदनशिल होने की वजह मनोवैज्ञानिक दृष्टीसे अति सूक्ष्म विचार प्रगट किये है। इसिलिये पाश्चात्य विव्दानाने मानसशास्त्र के अंतर्गत संगीत के उगम पर कुछ अलग विचार प्रगट किये है। विश्व विख्यात मानसशास्त्रज्ञ सिग्मन फ्राईट के अनुसार संगीत का जन्म एक शिशू के समान मनोवैज्ञानिक आधार पर हूआ। जिस प्रकार एक शिशु हंसना, रोंना अपने आप सिख जाता है उसी प्रकार संगीत का प्रादुर्भाव मानव में मनोविज्ञान के अनुसार हूवा। जेम्स लैंक के अनुसार पहले मानव ने बोलना, चलना सीखा फिर धीरे धीरे कियाशील होने पर उसके अंदर संगीत स्वतःही उत्पन्न हो गया। जाकोबिल ने अपनी पुस्तक में लिखा है की मानव को संगीत का ज्ञान कैसे हुआ यह एक विवादास्पद प्रश्न है। पर फिर भी इतना तो कहा जा सकता है कि जब मानव को भूख तथा प्यास महसूस हूई होंगी, तभी उसे अपने अंदर संगीत की हलचल महसूस की होगी। ऐसा माना जा सकता है क्योंकि अभीतक कोई ठोस तथ्य नही मिले है। परंतु इतना तो कहा जा सकता है की मानव को संगीत का ज्ञान अन्य सभी कलाओं के पहले हूआ है।12

डार्विन का कहना है की पशु मैथून के समय कुंजन या मधूर ध्वनी करते है। मनुष्य ने जब इन प्रकार की ध्वनि का अनुकरण आरम्भ किया तो संगीत का उद्भव हूआ। कार्ल स्टम्फ की यह धारण है की मानव ने जब ध्वनि के व्दारा संकेत करना प्रारम्भ किया तो भाषा का प्रदुर्भाव हुआ। जब वह उॅची आवाज में चिल्लाता तो वह एक विशेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिये ठहरता। विशेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिये ठहरने से एक विशेष तारता उत्पन्न होती थी। उसी ने स्वर का रूप ग्रहण कर लिया। उसके मत से भाषा संगीत का ही पुर्व रूप है।13

उपरोक्त सभी सन्दर्भ से यही पुष्टि होती है की अलग विचार धाराओं अंतर्गत संगीत की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न मतो का प्रतिपादन हुआ है। मनोवैज्ञानिक पक्ष व्यक्तिगणीक, भौगोलिक परिस्थिती अनुरूप अलग हो सकता है।

3.वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रकृति ने मानव को विज्ञान एक ऐंसी असिम शक्ति प्रदान की है जिसके बलबूते पर उसने सीमाओं के परे अनछूये सत्य का आकलन किया है। हर सत्य की कसोटीपर विज्ञान ही हर वक्त खरा उतरा है। इसी विज्ञान के आधार पर संगीत के अनछूये उत्पत्ति के रहस्य को हम अलग नजर से देखेगे।

प्रागऐतिहासिक कालखंड के पूर्व जब मनुष्य अपने विकास के प्रारम्भीक अवस्था से गुजर रहा था तब ना तो उसका बौध्दिक विकास हूवा था ना ही शारिरीक विकास। अन्य प्राणीमात्राओं कि तरह उसका जिवन क्रमित होता था। जंगल में रहने की वजह से अन्य हिंसक प्राणीओं से बचाव हेतू वह समूह में रहने लगा। समूह का कामकाज चलाने हेतू बौध्दिक विकास न होने के कारण केवल मात्र चिन्हो व्दारा प्राथमिक कुछ कियाओं को वह व्यक्त करने लगा। समुह में रहने की वजह से माता, पिता, पुत्र, भाई, बहन इन पारिवारिक रिश्तो को वह समझने लगा। पती का पत्नि स लगाव, पत्नि का पती से लगाव, माता पिता का बच्चों से लगाव, इन सभी भावनात्मक लगाव को व्यक्त करने में चिन्ह, शारिरीक तथा मूद्रा भाव और भावात्मक ध्वनिओं को वह उपयोग में लाने लगा। इसि तरह सुख, दुःख,भुक, प्यास,

आक्रोश, आनंद, बचाव, सुरक्षात्मक संकेत इन सभी क्रियाओं को वह चिन्ह मुद्रा भाव और ध्वनियो से व्यक्त करने लगा।

चिन्ह, शारिरीक तथा मूद्रा भाव तभी काम आते जब समूह एक साथ हो उनमें कोई रूकावट न हो। पर जब वह एक दूसरे से काफी दूर रहते थे तब ध्वनि के अलावा कोई माध्यम नही था। उन ध्वनिओं का अगर हम विचार करे तो वह काफी उॅचा, दिर्घ और कायम रहना आवश्यक है। तभी दूर खडे साथी उसे सून सकते है। अब प्रश्न यह है की वह आवाज किस तरह का होता होंगा। इसका जवाब अत्यंत सरल है। मानव जंगल में रहता था तब विभिन्न प्राणी, पशु पक्षीओं से वह धिरा रहता। उनके आवाज वह सदैव सुनता था। और मानव का मनोवैज्ञानिक सतह पर अगर हम विचार करे तो यह सर्वमत है की मानव सदा से ही अनुकरणशिल रहा है। इस तरह वह पशु पक्षीओं के आवाज का अनुकरण करने लगा। पशु पक्षी भी अपने विभिन्न भावों को विभीन्न ध्वनिओं व्दारा व्यक्त करत है। अलग अलग ऋतू में उनका आवाज अलग अलग रहता है। पशु पक्षिओं के संबंध के वक्त उत्पन्न होने वाले ध्वनि की श्रृंगारता, लढाई के वक्त होनेवाले ध्वनिओं की भयानकता, शिकार के वक्त शिकारी की बिभत्स और शिकार की करूणता इन सभी रसों के ध्वनिओं का अनुकरण मानव करने लगा।

अभी भी हम देखते है की कुछ व्यक्तिओ की आवाज में जन्मतः काफी मिठास और मधूरता रहती है। ठिक उसी तरह उस वक्त भी कुछ मनुष्य के आवाज के आवाज में मधुरता रही होंगी। अगर वहा उॅची हों आवाज में दिर्घ काल तक उपने साथीयों को पुकार लगाता होंगा तो वह ध्वनि स्वर की अंशतः प्रतिमा प्रस्तुत करता होगा। क्योकि स्वर की परिभाषा करते वक्त हम कहते है की जिस आवाज में स्पष्टता हो, कायम उॅची, माधुर्य हो उसी को स्वर कहते है। इसिलिये यह सिध्द होता है की स्वरों की निर्मिती मानव के प्रारम्भिक अवस्था में ही हुई थी केवल समझ न होने की वजह वह उसे संगीत के रूप में नही देखता था। अभी भी हम देखते है की जिन्हे गाना गाना नही आता वही किसी अच्छे गायक के पास गाना सिखने जाते है। और गाना सिखते वक्त नाद की सुक्ष्मताओं का उसे धीरे–धीरे आकलन होता हैं। ठिक उसी तरह उस वक्त जीसकी आवाज मिठी औंर मधूर थी उसका अनुकरण अन्य मनुष्य करने लगे। और इस अनुकरण में ध्वनिओं की सुक्ष्मताओं का उसे आकलन होने लगा।

यह सभी शास्त्रज्ञों ने सिध्द किया है की मानव ने जब शिकार करके गोश्त खाना शुरू किया तब उसका बौध्दिक विकास ज्यादा होने लगा। ठिक उसी तरह मनूष्य के जिवन विकासक्रम में आग और चक्र के शोध ने उसका जिवन ही पूर्णरूप से बदल दिया। इसी बौध्दिक विकास के कारण जिनकी आवाज मधूर थी वह चिकित्सावश प्राकृतिक ध्वनिओं का अध्ययन और अनुकरण करने लगे। पेड की सुखी छाल को दिमक खाने हेतू निकालते वक्त होनेवाले ध्वनी, पेड की टेहनी से पेड पर मारने से होने वाला ध्वनि, सुखे पत्तोपर पावस की गिरती बूंदो का ध्वनि, नदीओं की धाराओ का ध्वनि, समुद्र की लहरों की ध्वनि, हवाओं के ध्वनिओं की आस, प्रणीओं के दौडते वक्त उत्पनन ध्वनिओं की लय, भोरे की मधूर गुंजन आदि मधूर तथा लय ध्वनिओं का वह अध्ययन करने लगा। इसी अध्ययन तथा अनुकरण में स्वरों का विकास होने लगा। शायद इसी तत्व अनुसार हमारे भारतीय अभिजात संगीत में भी हर स्वर को पशु पक्षिओं से निर्मित माना गया है। जैसे पं. दामोदर के अनुसार संगीत की उत्पत्ति पक्षियों व्दारा मानते हुए मोर से षड्ज, चातक से रिषभ, बकरा से गंधार, कौआ से मध्यम, कायेल से पंचम, मेंढक से धैवत, हाती से निषाद स्वरों की उत्पत्ति मानी है।14 श्री गंधर्व वेद में मयूर से षड्ज, चातक से रिषभ, अज से गंधार, क्रौंच से मध्यम, कोकिल स पंचम, अश्व से धैवत, गज से निषाद की उत्पत्ति मानी है।

भारत का प्राचीन इतिहास 3500 ई.पू. के लगभग आरंभ होता है। इस अंधकार युग का कोई इतिहास नही मिलता। अंधकार युग को चार भागो मे बॉटा गया है।

1. पुर्व पाषाण काल 2. उत्तर पाषाण काल
3. ताम्र काल 4. लोह काल

पुर्व पाषाण काल में मानव जंगली अवस्था में रहता था। इन लोगो को पत्थर के प्रयोग का ज्ञान हो गया था। पत्थर के दो चौकोर टुकडे मंजीरे के समान बजाये जाते थे।15 मानव के विकासक्रम में जब वह खेती का बूनियादी तत्व जानकर खेती करने लगा तब सामूहिक रूप में वह स्थायी हो गया। उबजाउ जमीन के महत्व का उसे ज्ञान हुआ। नदी और उबजाउ जमीन के पास दस, बारह परिवारोंका समूह स्थायी होकर खेत और शिकार करने लगा। समूह में संख्या बढने से विचारों का आदान प्रदान हेतू भाषा का विकास होने लगा। भाषा के विकास से व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर समूह का ज्ञान बढने लगा। इसितरह संगीत कला और अन्य ललित कलाओं के ज्ञान में जल्दि विकास होने लगा। खेतों से स्थायी रूप प्राप्त होने से खाने की चिंता अब मानव को नही रही। और इसी कारणवश वह ज्यादा सोचनेलगा और नाद की सुक्ष्मतम तत्वों पर चिंतन करने लगा। अब संगीत कला प्राकृतिक पशु पक्षिओं के ध्वनिओं का केवल अनुकरण न रहते हुए उसे शास्त्रीय स्वरूप प्राप्त होने लगा। इसी काल में संगीत से मनोरंजन, चित्रकला से जिवन दर्शन, मूर्तिकला से विविध प्राणी, मानव की प्रतिकृतियॉ तथा स्थापत्य कला अतर्गत घरों का निर्माण होने लगा। केवल काव्य कला का निर्माण शब्दों की लिखावट का विकास ने होने से इस कला में प्रचलन में नही था।

उत्तर पाषाण काल में मानव ने अच्छे हथियार बनाना आरम्भ कर दिया था। सामाजिक भावना का भी प्रचार हो गया था। स्त्री पुरूष दोनों संगीत का आनंद लेते थे।16 मानव को कबीले के रूप में सामाजिक स्थायित्व प्राप्त होने से सामाजिक विचारों का आदान प्रदान होने लगा। सभी संस्कृतिओं में जिन लोगो का बौध्दिक विकास ज्यादा था वह उत्सुत्कापूर्वक सृष्टिके रहस्यों को समझने लगे। औंर इसी उत्सुत्कापूर्वक चिकीत्सा में सृष्टी के पंच महाभूतो का उसे ज्ञान हूआ। देवता के रूप में प्रत्यक्ष स्वरूप में दर्शन देनेवाले सुर्य कि उपासना सभी संस्कृतिओं में होने लगी। धरातल पर अप्रत्यक्ष रूप में प्रतिकात्मक स्वरूप में अग्नि की पूजा होने लगी। भारत में उसे होम के रूप में सुर्य देवता की उपासना के लिये माध्यम माना गया। इसी कालखंड को ताम्र काल माना गया है। भाषा का विकास होकर मानव के संगीत ज्ञान में वृध्दि हुइ थी। संगीत को धार्मिक रूप देणे का गौरव इसी युग के मानव को जाता है।

अब प्रश्न यह है की वेद कालिन संस्कृति के पहले, साम के छन्दोबध्द गीतो के पहले विभिन्न स्तोभों का स्वरूप किस प्रकार का रहा होंगा। यहा दो बातों पर विचार करना होगा। पहले तो साम के स्तोभों का उच्चारण और दूसरा उस तरह के उच्चारण का प्रारम्भिक स्वरूप कहा प्राप्त होता है। अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है की विश्व भर में 'स्तोभ की ध्वनि समान रूप से अहा, हो, हाउ, ओहा, हे, ल, य, ल, हुम, हॉ, हॉ इत्यादी है। आज भी सामवेद के बहुत से गान में ये स्तोभ वर्तमान है। जैसे एक उदाहरण लिजिये–

स – – – स –	स – – – स –	स – – – स –
हा ऽऽऽ उ ऽ	हा ऽऽऽ उ ऽ	हा ऽऽऽ उ ऽ
सं – – – नि – ध – – –प –	सं – – – नि – ध – – –प –	
आ ऽ ऽ ऽ ज्य ड दो ऽऽऽ हम्	आ ऽ ऽ ऽ ज्य ड दो ऽऽऽ हम्–17	

आज भी आफ्रिका के अनेक आदिम जन जमाजिओ में जब शिकार अग्नि पर पकाई जाती है तो आनंद और उत्साह प्रदर्शित करने के लिये अहा, हो, हाउ, ओहा, हे, य, ल, हॉ आदि ध्वनिओं का उच्चारण वह करते है। अब और गौर करने की बात यह है की इन दो उदाहरणो में दोन बाते समान है। एक अग्नी और दुसरी विविध ध्वनीयॉ जो एक समान है। यह सिध्द होता है की प्राचीन काल के मानव के आदिम अवस्था में शिकार को अग्नि पर पकाते वक्त होने वाले ध्वनिओं का संसकारीत रूप साम गायन के स्तोभो में हमें प्राप्त होता है। इसी विकासप्रकम में जब मानव होता है।

यह ये ज्ञात होता है की संगीत कला जिसमें गायन नृत्य का अर्विभाव है इन सभी कलाओं का प्रारंभीक स्वरूप आदिम काल में ही तय हो चूका था. शिकार अग्निपर पकाते समय होनेवाला संगीत, नृत्य और वादन का संस्कारित रूप होम हवन के वक्त होनेवाले साम गायन, वादन नृत्य में परिवर्तीत हूआ।

इसी विकास क्रम में जब मानव लोह काल तक आया तो त्यौहार आदि के समय में संगीत का प्रयोग होता था। रंग बिरंगे कपडे पहनकर नृत्य किया जाता था। रस समय मालाएं मुकुट, घुंगरू आदि का प्रचार था।18 इसके बाद वेद कालिन संस्कृति तथा काल की शुरूवात हूई। वेद काल पूर्व मानव ने अपना बौध्दिक, सामाजिक, राजकीय, धार्मिक, साम्प्रदायिक विकास अच्छे स्तर पर कर लिया था।

निष्कर्षः–

प्राचीन काल के उतरार्ध में संगीत की दो धाराये प्रवाहीत हुई, मानोरंजन के लिये लोक संगीत का विकास हुआ तथा आत्मरंजन और धार्मिक कार्य अंतर्गत सामगायन की निर्मीती हूई। लोक संगीत सभी लोगो का मनोरंजन का माध्यम होने से वह सहज और सूलभ रहा। इसके विपरीत साम गायन पर हमेशा संस्कार हुए और उसका विकसित रूप आज शास्त्रीय गायन में हम देख सकते है। सभी तत्वों से एक विचार यह सामने आता है की लोक संगीत के प्रभाव लोक सगीत पर पडा। इसी शास्त्रीय संगीत का प्रारंभीक प्रभाव सामगायन के निर्मिती के लिये आवश्य रहा। परंतु सामगायन की संहीता तय होने के बाद सामगायन खुद अपने शास्त्र से विकसीत होता गया। और जब सामगायन के विसा क्रम कें संहीता, शास्त्र विकसीत हुए तो उनका प्रभाव लोक संगीत पर पडा। इसी शास्त्रीय संगीत के प्रभाव कारण लोक संगीत से उपशास्त्रीय संगीत की निर्मिती हुई। वेद कालीन शास्त्रीय संगीत की संहिता तय होने से उसपर लोक संगीत का कोई प्रभाव नव राग निर्मिती के अलावा नही पडा। मानसिक और शारिरीक मनोरंजन से मन और आत्मा के आत्मरंजन का प्रवाह लोक संगीत से शास्त्रीय संगीत की दिशा क्रमित करती है।

संदर्भ सूचीः–

1. संगीत मॅन्युअल – डॉ.मृत्यंजय शर्मा – पृ.क्र.83
2. पूर्वोक्त पृ.क्र.83
3. निबंध संगीत –लेख सदीयो वर्ष पूर्व जब धरतीपर संगीत लहराताथा,लेखक डॉ.मृत्यंजय शर्मा –पृ.क्र.123
4. पूर्वोक्त पृ.क्र.127
5. पूर्वोक्त पृ.क्र.127
6. पूर्वोक्त पृ.क्र.127
7. संगीत मॅन्युअल – डॉ.मृत्यंजय शर्मा – पृ.क्र.83
8. संगीत विशारद– प्रभूलाल गर्ग, वसंत पृ.क्र.424
9. पूर्वोक्त पृ.क्र.416
10. पूर्वोक्त पृ.क्र.424
11. श्री गंधर्व वेद–गायन वादन नर्तनसंगीत ज्ञानकाष–पं.वसंत माधव खाडिलकर, पृ.क्र.57–58
12. संगीत मॅन्युअल – डॉ.मृत्यंजय शर्मा – पृ.क्र.83
13. भारतीय संगीत का इतिहास– डॉ.ठाकूर जयदेव सिंह पृ.क्र.2
14. संगीत मॅन्युअल – डॉ.मृत्यंजय शर्मा – पृ.क्र.85
15. श्री गंधर्व वेद–गायन वादन नर्तनसंगीत ज्ञानकोष–पं.वसंत माधव खाडिलकर, पृ.क्र.74
16. पूर्वोक्त पृ.क्र.109
17. म्यूजिक ऑफ हिंदूस्थान– फॉक्स स्ञंगवेज– पृ.क्र.272
18. संगीत मॅन्युअल – डॉ.मृत्यंजय शर्मा – पृ.क्र.110